रक्तदान – महादान

प्रस्तावना मनुष्य अपने जीवन में कभी न कभी किसी न किसी वस्तु का दान तो करता ही है। चाहे वह दान धन का हो विद्या का हो या आहार का हो। परंतु कुछ व्यक्ति रक्त का दान करते हैं वे सर्वश्रेष्ठ होते हैं सामाजिक रूप से मनुष्य समाज में रहता है उसे कभी न कभी किसी अन्य व्यक्ति की आवश्यकता होती है। सदाचारी व्यक्ति हर क्षेत्र में सम्मान का पात्र बनते हैं और वे सम्मान के पात्र अपने अच्छे आचरण व दान के कारण ही बनते हैं। मनुष्य का अच्छा आचरण होना अत्यंत आवश्यक है। इसके साथ उसे दानशील होना भी आवश्यक है वह समाज से हर प्रकार से प्रभावित होता है।

दान से तात्पर्य दान का अर्थ है देना। मनुष्य अपने जीवन में दान करता है। दान का अर्थ देना तो है परंतु उसे दया कहना अनुपयुक्त है मनुष्य किसी भी व्यक्ति को यदि आहार दान देता है तो लेने वाले का पेट उसे दुआ देता है। यदि वह धन का दान करता है तो उसने जितना भी दान किया है उसका दस गुना पाता है। दान मानव जीवन में आवश्यक है।

प्राचीन काल से दान का महत्त्व प्राचीन काल से ही दान का बहुत महत्त्व रहा है। प्राचीन काल में राजा महाराजा अपनी शौर्य प्राप्ति के लिये दान करते थे और अपने सम्मान को बनाये रखने में समर्थ थे। कर्ण ने अपने विजय कवच और कुंडल दान दिया। भगवान परशुराम ने मानव जीवन के निवास के लिये की भूमि का दान दिया और भगवान बन गये। इसी प्रकार आधुनिक काल में रक्तदान का बहुत महत्त्व है। यदि कोई मानव रक्तदान करता है तो वह अन्य कई व्यक्तियों की जान भी बचा सकता है।

रक्त की उपयोगिता रक्तदान देकर उन्हें रक्त बैंकों में रखा जाता है जो कि आवश्यक व्यक्ति को प्राप्त कराया जा सकता है। रक्तकोष में रखा रक्त किसी भी व्यक्ति की जान बचा सकता है। कारगिल में हमारी मातृभूमि की रक्षा में कार्यरत मनुष्यों को रक्त कोष से रक्त प्रदान कर उनके जीवन को बचाया जा सका है। यदि आप रक्त कोष में रक्त का दान करते हैं तो वह किसी व्यक्ति विशेष के लिये नहीं होता बल्कि उस रक्त का उपयोग किसी भी व्यक्ति की जान बचाने में किया जा सकता है। अतः इस प्रकार रक्तदान की उपयोगिता सिद्ध हो सकती है। रक्त का निर्माण हमारे शरीर में उचित भोजन एवं प्रोटीन विटामिन से होता है। हमारे शरीर में रक्त की मात्रा 5 लीटर होती है जिसमें से हम लगभग 300 मिली दान कर सकते हैं।

श्रेष्ठता रक्तदान की श्रेष्ठता के विषय में मेरे विचार निम्न प्रकार से हैं : जिस प्रकार मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है। उसी प्रकार रक्तदान करने वाला व्यक्ति भी श्रेष्ठ होता है। वह अपने रक्त से यदि किसी अन्य व्यक्ति की जान बचा सकता है तो वह व्यक्ति जीवनदाता कहलाता है क्योंकि यदि रक्त के अभाव से मर रहे व्यक्ति को वह अपने रक्त की बूंदों से बचा सकता हो, तो वह व्यक्ति श्रेष्ठ होता है और यही बात मैं इस विषय में सिद्ध करता चाहता हूँ।

भ्रांतियाँ रक्तदान से होने वाली भ्रांतियां निम्नलिखित हैं : कई व्यक्ति धन के लालच में रक्तदान करते हैं। इस प्रकार से व्यसन के नये रास्तों का निर्माण हो रहा है। व्यसनी व्यक्ति अपना रक्तदान कर देते हैं, जिससे कि उनका रक्त जिस अन्य व्यक्ति को दिया जा रहा है वे भी इस समस्या के शिकार बन जाते हैं। व्यसनी व्यक्तियों के खून में भी कई प्रकार की बीमारियां होती हैं जो कि किसी अन्य व्यक्ति के शरीर में पहुंच जाती हैं और वह भी बीमार बन जाता है। रक्त प्राप्त करने के बाद वह रक्त के अभाव से तो पूरित हो जाता है, परंतु उसके साथ उसे अन्य कई बीमारियां भी लग जाती हैं और जिन से वह व्यक्ति मर जाता है। इस प्रकार हमारे देश तथा अन्य देशों में भी इस समस्या से प्रतिदिन लाखों लोग अपने जीवन से हाथ धो रहे हैं और इस समस्या को दूर करना अनिवार्य हो गया है।

दूर करने के उपाय

इन भ्रांतियों को दूर करने के उपाय निम्नलिखित हैं :

1. रक्त कोष में रक्त की जांच करके ही रक्त लेना चाहिए।
2. रक्तदान नशाखोरों व व्यसनी व्यक्तियों के लिए आय का साधन सा बनता चला जा रहा है। इस पर रोक लगा देनी चाहिए।
3. व्यसन के सामानों पर प्रतिबंध लगा देना चाहिए।
4. इस समस्या को दूर करने के लिए रक्त बैंकों द्वारा लागू किये गए नियमों का पूर्णतः पालन करना चाहिए।
5. कोई भी व्यक्ति तीन महीने के अंतराल से 300 मिली रक्तदान कर सकता है।
6. दूरदर्शन, रेडियो आदि के माध्यम से रक्तदान का प्रचार करवाना।

रक्तदान से होने वाले लाभ

रक्तदान से होने वाले लाभ निम्नलिखित हैं :

1. अपने द्वारा किसी अन्य व्यक्ति की जान बचायी जा सकती है।
2. रक्तदान द्वारा हमारे शरीर से पुराना रक्त बाहर निकलता है तथा नया रक्त का निर्माण होता है।
3. हमारा शरीर स्वस्थ रहता है।
4. हमारे परिवार के सदस्यों के काम में भी आ सकता है।
5. इससे हमारे शरीर का रक्त संचालन सही रहता है।
6. शरीर का तापमान सही बना रहता है।
7. रक्त श्वसन की क्रिया में भी सहायक होता है।
8. रक्त बैंकों द्वारा रक्त का क्रय विक्रय भी किया जा सकता है।

सावधानियाँ (रक्तदान करने की शर्तें)

रक्तदान करते समय निम्नलिखित सावधानियों को ध्यान में रखना चाहिए :

1. रक्तदान करने वाला व्यक्ति 18 वर्ष की आयु पार कर चुका हो।
2. वह अपने शरीर का 300 मिली रक्त ही दान कर सकता है।
3. मानव शरीर का स्वस्थ होना अत्यंत आवश्यक है।
4. मानव शरीर का समयानुसार स्वास्थ्य परीक्षण करना चाहिए।
5. रक्तदान 3 महीने के अंतराल से किया जाना चाहिए।
6. मनुष्य अपने शरीर का जितना भी रक्त दान करता है वह 48 घंटों में अपना पूर्व स्तर प्राप्त कर लेता है।
7. रक्तदान करते समय अपने खून की जांच करा लेना चाहिए जिससे कि किसी अन्य व्यक्ति को नुकसान न हो।
8. मनुष्य को रक्त दान धन के लालच में नहीं करना चाहिये।

उपसंहार उपरोक्त विषय में यह स्पष्ट हो चुका है कि रक्तदान ही महादान है। दूरदर्शन, रेडियो के माध्यम से रक्तदान का प्रचार प्रसार करवाना चाहिए। जिससे कि गांव के लोग भी रक्तदान से मिलने वाले लाभों से अवगत हो सके। आज के युग में मानव उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर जा पहुंचा है। वह रक्तदान करके किसी भी व्यक्ति की जान बचा सकता है, यदि छोटे-छोटे गांवों में यदि रक्तदान शुरू हो जाता है, तो वहां रहने वाले अन्य व्यक्तियों को उनके द्वारा मदद की जा सकती है जो कि संसार की आर्थिक व सामाजिक विकास में सहायक होगी। अतः रक्तदान ही महादान है।